P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-8* ISSUE-4* December- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अतिविलम्बित लय के जनक : उस्ताद अमीर खाँ

Father of Very Slow Tempo: Ustad Amir Khan

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

दीपक बादल
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

रौशन भारती
सह आचार्य,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

भारतीय संगीत में ख्याल गायकी का विकास हुआ तो ख्याल मध्यलय के रूप में विकसित हुआ। प्रारम्भ में ख्याल गायन तानकारी व गति पर आधारित था। जो मुख्यतः ग्वालियर और आगरा घराने की देन है। परन्तु जैसे–जैसे ख्याल गायकी श्रोताओं में अपनी नई पहचान बनाने लगी वैसे–वैसे नए–नए घरानों का भी जन्म हुआ। प्रारम्भ में सभी घरानों में ख्याल की लय मध्यलय या द्रुत ही थी। परन्तु किराना घराने में ख्याल की लय अब्दुल वहीद खाँ के समय मध्यलय से विलम्बित लय पर आ गई। उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के शिष्य उस्ताद अमीर खाँ ने इसी लय को अतिविलम्बित कर दिया और ख्याल गायकी को नए रूप में विकसित व स्थापित किया। उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ से सीखने के पहले उस्ताद अमीर खाँ के ख्याल की भी मध्य लय ही थी। उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय को तात्कालीक व आने वाले सभी गायकों ने अपनाया और इसी लय को आधार मानकर ख्याल गा रहे हैं। उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय ने ख्याल गायकी को नए आयाम तक पहुँचाया और इस अतिविलम्बित लय से ख्याल गायकी को नई पहचान मिली तथा ख्याल गायन की प्रकृति ध्रुपद गायन जैसी गंभीर हो गई।

Khyal singing was developed in Indian music, and Khyal developed into a medium Tempo. Initially, Khyal was based on singing and speed. Which is mainly the product of Gwalior and Agra house. But as soon as the audience started making a new identity in the singing audience, new families were also born. In the beginning, the rhythm of Khyal in all the houses was medium or rapid. But in the Kirana Gharana, the rhythm of Khyal came to a delayed rhythm from the middle time during Abdul Waheed Khan. Ustad Amir Khan, a disciple of Ustad Abdul Waheed Khan, greatly delayed this rhythm and developed and established Khyal singing. Before learning from Ustad Abdul Waheed Khan, Ustad Amir Khan also had the same rhythm of thinking. All the immediate and upcoming singers adopted the highly delayed rhythm established by Ustad Amir Khan and are singing the idea with the same rhythm as the basis. The extremely delayed rhythm established by Ustad Amir Khan took the Khyal singing to a new dimension and this delayed Tempo gave the Khyal singing a new identity and the nature of the Khyal singing became as serious as the Dhrupad singing.

मुख्य शब्द : लय, मात्रा, ठेका, MM.
Rhythm, Matra, Theka.

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत अनेक विधाओं से युक्त है। शास्त्रीय गायन उन विधाओं में एक प्रमुख विधा है। भारतीय संगीत की उत्पत्ति प्राचीन समय से मानी जाती है। शास्त्रीय गायन के रूप में सबसे पहले पद, निबद्ध, प्रबन्ध आदि रचनाओं का प्रयोग होता था। बाद में जैसे–जैसे समय आगे बढ़ता गया, गायन का स्वरूप बदलता गया। अब पद, प्रबन्ध का स्थान ध्रुपद, धमार ने ले लिया। वर्तमान में ध्रुपद को सुनने पर पता चलता है कि ध्रुपद की प्रकृति बहुत गंभीर है। जिसमें सुगमता के स्थान पर शास्त्र पर अधिक ध्यान दिया गया है।

ध्रुपद के बाद संगीत का स्वरूप और बदलता गया और 18वीं शताब्दी में ख्याल ठुमरी, टप्पा, गज़ल आदि नए गायकी के प्रकार विकसित हुए। ख्याल गायकी ध्रुपद गायकी के बाद प्रमुख शास्त्रीय गायकी के रूप में उभर के सामने आयी। प्रारम्भ में ख्याल गायकी की लय मध्य व द्रुत रही। ख्याल गायकी के प्रारम्भ में जितने भी घराने थे जैसे – ग्वालियर, आगरा, जयपरु, किराना, रामपुर आदि सभी ख्याल गायन में मध्य अथवा द्रुत लय का ही प्रयोग करते थे। बाद में

जैसे–जैसे ख्याल गायकी विकसित हुई किराना घराने के गायक उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ ने ख्याल की लय को विलम्बित कर दिया, जो उस समय तक की सबसे धीमी लय थी। परन्तु बाद में उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के ही शिष्य उस्ताद अमीर खाँ ने विलम्बित लय को और धीमा कर दिया और नई लय की खोज की जो ख्याल गायकी में अतिविलम्बित के रूप में पहचानी जाने लगी। इस प्रकार ख्याल गायकी ने मध्यलय से विलम्बित और अतिविलम्बित रूप में आकर अपनी पहचान बनाई।

विश्लेषण

1950 के दशक तक अमीर खाँ का गायन भी मध्यलय में ही मिलता है। परन्तु अब्दुल वहीद खाँ से मिलने के बाद उन्होंने विलम्बित लय को और धीमा करके अतिविलम्बित कर दिया। उस्ताद अमीर खाँ पहले गायक थे जिन्होंने लय को अतिविलम्बित किया।

पी.एल.शर्मा ने जनवरी 1975 में एक साक्षात्कार में बताया कि 20 सदीं तक विलम्बित लय 35 MM प्रति मात्रा से कम नहीं रही। उस्ताद अमीर खाँ से पहले के गायकों की रिकॉर्डिंग सुनने पर पता चलता है कि उस समय की लय और अमीर खाँ द्वारा स्थापित लय में बहुत अन्तर है।

उदाहरण के तौर पर उस्ताद फैयाज़ खाँ के राग दरबारी, यमन, तोड़ी के रिकॉर्डिंग को सुनने पर पता चलता है कि उसमें जो विलम्बित लय है वह 36 MM (मात्रा प्रति मिनट) है अर्थात् एक मात्रा पर ठहराव 1.66 सैकण्ड है। उसी प्रकार उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के राग बसंत के विलम्बित में एक मिनट में 36 मात्राएँ है। इसमें भी प्रतिमात्रा ठहराव 1.66 सैकण्ड है। उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के राग दरबारी के रिकॉर्डिंग सुनने पर पता चलता है कि उनके विलम्बित झूमरा में जो लय है, उसमें एक मिनट में 24 मात्राएँ समाहित और प्रति मात्रा ठहराव 2.5 सैकण्ड है। उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के द्वारा स्थापित विलम्बित लय उस समय तक की सबसे धीमी लय थी।

उस्ताद अमीर खाँ पर उस्ताद अब्दुल वहीद खाँ के गाने का सीधा प्रभाव था। उस्ताद अमीर खाँ ने अब्दुल वहीद की लय को और धीमा कर दिया। यूं कहे तो ठीक होगा कि बिल्कुल आधा कर दिया और एक नई लय की स्थापना की जिसे अतिविलम्बित लय कहा गया। जैसे उस्ताद अमीर खाँ के राग मारवा का रिकॉर्डिंग सुनने से पता चलता है कि झूमरा ताल में 14 मात्रा का एक चक्र पूरा होने में 1 मिनट 10 सैकण्ड का समय लगता है, जिसको 12 MM बोला जा सकता है अर्थात् एक मिनट में 12 मात्राएँ ही बोली गई है अर्थात् प्रतिमात्रा ठहराव 5 सैकण्ड है। जो अब्दुल वहीद खाँ के ठहराव के समय से दुगुना है। इसी लय को अतिविलम्बित लय के नाम से जाना जाने लगा। इसी प्रकार राग माल्कौस व राग दरबारी के रिकॉर्डिंग में प्रति मात्रा ठहराव 4.7 सैकण्ड है। इस प्रकार उस्ताद अमीर खाँ ने नई लय को स्थापित किया, जिसने सम्पूर्ण जगत में अपनी नई पहचान बनाई।

कुछ प्रमुख शब्द

1. लय – संगीत में समय की गति।
2. मात्रा – समय माना हुआ टुकड़ा या भाग।
3. ठेका – ताल का शुद्ध रूप।
4. MM – मात्रा प्रति मिनट।

साहित्यावलोकन

उस्ताद अमीर खाँ द्वारा ख्याल गायकी में अतिविलम्बित लय के प्रयोग को लेकर कई शोधकर्ताओं के द्वारा भी शोध किया जा चुका है। शोधकर्ताओं के शोध में अतिविलम्बित लय पर उस्ताद अमीर खाँ द्वारा किए गए अनूठे प्रयोग पर ध्यान दिया गया है। विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा किए गए शोध का साहित्यावलोकन इस भाग में प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. तेजपाल सिंह (2005) और प्रेरणा अरोड़ा (2005), इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय पर प्रकाश डाला है। इनके अनुसार उस्ताद अमीर खाँ के गंभीर स्वभाव के कारण अतिविलम्बित लय में गायन खाँ साहब के लिए सहजतापूर्ण था। अतिविलम्बित लय में गायक अपने विचारों को सही रूप से स्थापित कर सकता है। जिससे बार–बार गायक को सम पर आने की जल्दी नहीं होती है। जिससे गायक अपनी कल्पना को अधिक ऊँचाईयों तक उड़ान भरने के लिए इस लय का प्रयोग कर सकते हैं।
2. डॉ0 इब्राहिम अली (2011) इन्होंने अपने लेख में उस्ताद अमीर खाँ को स्वरों के ठहराव व अपनी कल्पना से राग बढ़त द्वारा अतिविलम्बित लय में गायन सुविधाजनक होता था। लय को अतिविलम्बित करने से ताल के बोलों के बीच अन्तराल बढ़ने से स्वर और अधिक प्रभावी बन जाता है। अतः उस्ताद अमीर खाँ की सोच व गंभीर प्रकृति ने ही लय को विलम्बित से अतिविलम्बित कर दिया।
3. पं0 अमरनाथ (2008), पं0 अमरनाथ खाँ साहब के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। पं0 अमरनाथ ने अपने लेखक में उस्ताद अमीर खाँ के स्वभाव प्रवृत्ति तथा स्वरों के प्रति लगाव के द्वारा ख्याल गायकी में किए गए नवाचारों के बारे में विस्तृत रूप से लिया गया है। उस्ताद अमीर खाँ के गायन का मध्यलय या विलम्बित लय से अतिविलम्बित लय पर आने का प्रमुख कारण उनकी सोच रही है। उस्ताद अमीर खाँ ने अपनी सोच को अपनी गायकी में समावेशित कर ख्याल को नया रूप दिया।
4. अजीत सिंह पेंतल (1996) इन्होंने अपने लेख भारतीय संगीत में उस्ताद अमीर खाँ की गायकी पर सूक्ष्म अध्ययन किया और उनके ख्याल गायकी के नवाचारों के बारे में विस्तृत लेख लिखा। अजीत सिंह पेंतल ने उस्ताद अमीर खाँ के द्वारा ख्याल गायकी में किए गए परिवर्तन जैसे अतिविलम्बित, सरगम, तराना आदि के बाद में विस्तृत चर्चा की है।
5. WIM VANDER MEER (1980), ने अपनी पुस्तक ''Hindustani Music in 20th Century'' में ख्याल गायकी में प्रयुक्त विभिन्न लय और समय का अध्ययन किया और बताया कि विलम्बित लय में प्रति सैकण्ड ठहराव उस्ताद अमीर खाँ से पहले कितना था और उनके बाद यह ठहराव किस तरह बदल गया। इन्होंने अपनी पुस्तक में बताया कि 20 सदी

तक विलम्बित लय 35 MM प्रति मात्रा से कम नहीं रही। उस्ताद अमीर खाँ ने इस लय को और धीमा किया और अतिविलम्बित लय की स्थापना की।

6. पं. अमरनाथ (2020) ने अपनी पुस्तक ''The Dictionary of Hindustani Classical Music '' में बताया कि उस्ताद अमीर खाँ ने मीर खण्ड का प्रयोग आलाप में किया और आलाप में राग के चलन के अनुसार स्वर समूहों के प्रयोग द्वारा अतिविलम्बित लय में मीर खण्ड के प्रयोग को और प्रभावी बनाया।
7. सरस्वती रमन (2014) ने अपनी पुस्तक ''The Mystery of Sound'' में बताया कि इन्दौर घराने के उस्ताद अमीर खाँ ने ख्याल झूमरताल में अतिविलम्बित लय में गाए है। उस्ताद अमीर खाँ के चिन्तनशील स्वभाव के कारण अतिविलम्बित लय गायन के परिप्रेक्ष्य से अनुकूल थी।

अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन का उद्देश्य है कि ख्याल गायकी में प्रयुक्त लय ख्याल उत्पत्ति से वर्तमान समय तक किस तरह परिवर्तित हुई है। प्राचीन समय में प्रयुक्त मध्यलय, मध्यलय से विलम्बित ओर विलम्बित लय से अतिविलम्बित लय तक के सफर को बताया गया है। इस लेखक में बताया गया है। ख्याल गायन जो 20वीं सदी तक (उस्ताद अमीर खाँ के समय से पहले) चंचल प्रकृति का था। उस्ताद अमीर खाँ ने ख्याल गायन में अलग–अलग घरानों की गायकी का मिश्रण किया और अपनी स्वयं की सोच से ख्याल गायकी को पूरी तरह परिवर्तित कर दिया। उस परिवर्तन में सबसे महत्वपूर्ण यह किया गया कि ख्याल गायकी की लय को विलम्बित से अतिविलम्बित कर दिया गया। उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय ख्याल गायकी अद्वितीय कदम माना जाता है। जिससे ख्याल गायकी में स्वर, आलाप, ठहराव, कल्पनाशक्ति, सरगम, तान आदि सभी के प्रयोग ने ख्याल गायकी को पूरी तरह बदल दिया और ख्याल गायकी को संगीत जगत में नई पहचान दिलाई। इस शोध पत्र के माध्यम से बताया जा रहा है कि उस्ताद अमीर खाँ प्रथम संगीतज्ञ थे जिन्होंने अतिविलम्बित लय का प्रयोग किया।

निष्कर्ष

उपर्युक्त लेख शास्त्रीय संगीत में ख्याल गायकी के अन्तर्गत अतिविलम्बित लय के प्रयोग पर प्रकाश डालता है। इस लेख में जहाँ अतिविलम्बित लय की उत्पत्ति को बताया गया है वहीं प्रथम बार ख्याल गायकी में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा उसके प्रयोग पर प्रकाश डाला गया है।

उस्ताद अमीर खाँ तक ख्याल गायन मध्यलय द्रुतलय में होता था। परन्तु उस्ताद अमीर खाँ द्वारा सर्वप्रथम अतिविलम्बित लय का प्रयोग संगीत जगत में किया गया और उनके इस प्रयोग ने ख्याल गायकी को अद्वितीय बना दिया।

ख्याल गायकी में उस्ताद अमीर खाँ द्वारा बनाई गई अतिविलम्बित लय के बारे में इस लेख को विद्यार्थियों तक पहुँचाया जाना चाहिए जिससे वह ख्याल गायकी के विस्तृत व गंभीर स्वरूप को समझ सके।

इस अनुसंधान में उस्ताद अमीर खाँ से पहले के गायकों के ख्याल गायकों की लय तथा उस्ताद अमीर खाँ द्वारा स्थापित अतिविलम्बित लय को मात्रा और समय के सम्बन्ध को उदाहरण द्वारा दर्शाया गया है। जो स्पष्ट रूप से यह बताता है कि ख्याल गायकी में उस्ताद अमीर खाँ ने लय को धीमा कर दिया और अतिविलम्बित लय बनाई, जो उनके समकालीन और आने वाले सभी ख्याल गायकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित हुई। उस्ताद अमीर खाँ के बाद के ज्यादातर ख्याल गायक अतिविलम्बित लय में बड़ा ख्याल गाते हैं। अतः उस्ताद अमीर खाँ द्वारा बनाई गई अतिविलम्बित लय ने ख्याल गायकी को नया स्वरूप दिया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *सिंह तेजपाल, अरोड़ा प्रेरणा, (2005), "संगीत के देदीप्यमान सूर्य उस्ताद अमीर खाँ : जीवन एवं रचनाएँ" ISBN : 978–81–7391–718–3 कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली, पेज न. 198*
2. *अली इब्राहिम, (2011), "USTAD AMIR KHAN : Life and Contribution to Indian Classical Music", ISBN: 3843389004, LAP LAMBERT Academic Publishing.*
3. *पं. अमरनाथ (2008), इन्दौर घराने के मसीहा पं0 अमरनाथ मेमोरियल फाउण्डेशन नई दिल्ली*
4. *MEER WIM VANDER (1980), "Hindustani Music in 20th Century", Martinus Nijhoff Publisher Pg. No. 52*
5. *पं. अमरनाथ (2020), "The Dictionary of Hindustani Classical Music" Penguin Books*
6. *रमन सरस्वती (2014), "The Mystery of Sound" ISBN 978-1-4969-9224-6, Author House, Page No. 39*